धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

अगस्त - सितम्बर 2008

- नेचर में जीवन के अटल मार्ग
  - श्रेष्ट कैसे बनें?
- साथी-सेवकों का सम्बन्ध
  - अपनी कमी व भूल की स्वीकृति नितान्त आवश्यक
- यह चुप-चाप तमाशा देखने वाले

कितने अवसर कितनी घड़ियां कितना समय गुजार दिया;
हाय! जीवन दाता को मैंने दिल पर न अधिकार दिया।
अहो भाग्य थे कितने मेरे, तुम को पाया जीवन में;
तुम को पाकर भी हे भगवन्, नीच सुखों को प्यार किया।
उच्च धर्म सम्बन्धी पाए, मण्डल पाया उच्च अनमोल;
श्रद्धा विहीन रहकर मैंने, अमृत से इनकार किया।
मैली चिन्ता नीच कामना, पोषण करके हृदय में;
कोमलता और पवित्रता पर, कैसा अत्याचार किया।
रोज २ हां किया निरादार, तुमरी ज्योति का भगवन्;
हृदय किया कठोर गुरु जो, बन्द जीवन का द्वार किया।
अपनत्व में ही रत रह-रह कर, स्वार्थ को न तज करके;
खुद का पतन किया और निष्फल औरों का उपकार किया।
शुभ प्रतिज्ञा बरसों तोड़ी, आत्म बल खोया अपना;
दुर्बल और निस्तेज बनाया, अपने को लाचार किया।
नीच घृणा के पीकर प्याले, खुशी-खुशी मदहोश हुआ;
अहं क्रोध को बढ़ा-बढ़ा कर, अपना मुरदा ख्वार किया।
करूणा जनक अवस्था मेरी, हे करूणामय दूर करो;
किसने बिना तुम्हारे भगवान, ऐसों का उद्धार किया।

❖❖❖❖❖❖❖❖❖

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

धर्म जीवन

खण्ड 20 अंक 8 – 9

अगस्त – सितम्बर 2008

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

नेचर में जीवन के अटल मार्ग

प्रश्न – नेचर में जीवन के मार्ग कौन – कौन से हैं?

उत्तर - नेचर एक है। इसके सब अस्तित्व एक दूसरे से दूर या निकट का संबंध रखते हैं। उसमें सब अस्तित्व दो ही वस्तुओं से संयुक्त हैं - एक जड़ और दूसरे शक्ति। शक्ति के कार्य से प्रत्येक अस्तित्व हर क्षण बदलता रहता है अर्थात् कभी भी कोई अस्तित्व एक अवस्था में नहीं रहता। परिवर्तन के पश्चात प्रत्येक अस्तित्व या तो पहले से श्रेष्ठ बन जाता है या बुरा। इन दोनों अवस्थाओं में एक अवस्था को ग्रहण करना प्रत्येक अस्तित्व के लिए अवश्यक है। यह हो सकता है कि कोई अस्तित्व कभी कुछ समय के लिए ऐसे हालात से घिरा हो कि वह पहले से कुछ बेहतर परिवर्तन प्राप्त करने लगे और फिर कुछ समय तक बुराई की तरफ जाने लगे या कुछ देर तक बुरा बनता रहे और फिर कुछ देर तक अच्छा होने लगे। प्रत्येक अस्तित्व के लिए अपनी शक्ति के कार्य से या बाहर की शक्तियों के कार्य से हर समय बदलते रहना अवश्यक है। कोई भी अस्तित्व इस अटल नियम से कभी भी बाहर नहीं जा सकता। यह परिवर्तन का अटल नियम नेचर के सब जीवित जगतों या अस्तित्वों पर ही कार्य नहीं करता बल्कि नेचर के सभी जगतों और सभी अस्तित्वों पर कार्य करता है और प्रति क्षण प्रत्येक अस्तित्व को विनाश या विकास, भली या बुरी, मृत्यु या जीवन की ओर ले जा रहा है।

प्रश्न – किसी अस्तित्वों के भले या बुरे बनने से क्या तात्पर्य है?

उत्तर - भगवान देवात्मा इस विषय में फरमाते हैं - प्रत्येक अस्तित्व परिवर्तित होने पर केवल दो ही रूप ग्रहण कर सकता है, या तो वह नेचर के विकास में पहले की तुलना में अधिक सेवाकारी बन जाए या इस के विरुद्ध पहले की तुलना में हानिकारक बन जाए। इस भली या बुरी अवस्था में किसी अस्तित्व का परिवर्तित होना उच्च या नीच रूप ग्रहण करना कहलाता है।

प्रश्न – क्या आप दोनों प्रकार के अस्तित्वों के कुछ दृष्टांत दे सकते हैं?

उत्तर - हां, सुनीएं, जैसे भौतिक जगत में हीरा और लाल आदि कई रत्न और सोना, चाँदी और लोहा आदि कई धातुएं और भाप और बिजली आदि कई शक्तियां उच्च श्रेणी के पदार्थ हैं और साधारण

पत्थर और कंकर उनकी तुलना में नीच श्रेणी के पदार्थ हैं। उद्भित जगत में गेहूँ, जौ, बाजरा, मकई, चावल, सरसों आदि कई प्रकार के दाने उत्पन्न करने वाले और आम, सेब, संतरे, अंगूर, नारियल, बादाम, अखरोट कई प्रकार के फल पैदा करने वाले और आलू, गोभी, करेला आदि कई प्रकार की भाजियां उत्पन्न करने वाले और रूई, जूट आदि कई प्रकार के सूत्र देने वाले और कई प्रकार के गुलाब, गुलदावदी, चमेली, मोतीया आदि कई प्रकार के फूल उत्पन्न करने वाले पौधे और वृक्ष उच्च श्रेणी के अस्तित्व हैं। भंग, आक, धतूरा, बिच्छूकंडा मोतीया आदि कई प्रकार के पौधे बहुत नीच श्रेणी के अस्तित्व हैं।

पशु जगत में गाय, बैल, घोड़ा, बकरी कई प्रकार के कुत्ते, कबूतर, मैना, मोर, रेश्मी कीड़े आदि जीव उच्च श्रेणी के और मच्छर, पिस्सू, खटमल, जूं, बिच्छू, चूहे, कौवे, सांप, भेड़िए, चीत्ते, बिल्ली, बाघ, चील, गिध, उल्लू और अन्य कई प्रकार के कितने ही हिंसक जीवन और प्लेग, हैजा, मलेरिया, बुखार और क्षय आदि रोग उत्पादक नाना प्रकार के कीटाणु नीच श्रेणी के जीव हैं।

मनुष्य जगत में कई पापों से मुक्त और एक या दूसरे प्रकार के विशुद्ध परोपकारी आत्मा उच्च श्रेणी के और मोटे-मोटे कुछ पापों और अपराधों से मुक्त किन्तु केवल सुख परायण और स्वार्थी आत्मा मध्यम श्रेणी के और चोरी, ठग्गी, व्यभिचारी, कसाई, नशेई, रिश्वतखोर, मिथ्यापरायण, धूर्त, पाखंडी, ईर्ष्यापरायण आदि महा हानिकारक आत्मा अधम श्रेणी के मनुष्य हैं।

प्रश्न – नेचर में कोई अस्तित्व पहले से भला या बुरा परिवर्तन उसके किस नियम से प्राप्त करता है?

उत्तर - भगवान देवात्मा इस विषय में यह फरमाते हैं-जैसे चक्की के दो पाटों के नीचे आकर कुछ गेहूँ साबत या कुछ पिसकर कई टुकड़ों में और बहुत से आटे और चोकर की शक्ल में बदल जाते हैं और भिन्न-भिन्न प्रकार की मिट्टी में बोए जाकर जल, वायु, रोशनी और ताप आदि के भेद से एक जाति के गेहूं भिन्न-भिन्न रूप ग्रहण करते हैं और नीचे रंग वाले एक ही प्रकार के जंगली कबूतर मनुष्य के द्वारा प्रतिपालित होकर और भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में रहकर कई प्रकार के रंगों में बदल जाते हैं, वैसे ही नेचर के परिवर्तन चक्र में विविध प्रकार के अस्तित्व अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार कई प्रकार की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में पड़कर विविध प्रकार के उच्च या नीच रूप ग्रहण करते रहते हैं।

प्रश्न – क्या लाखों मनुष्यों, पशुओं, पौधों और भौतिक पदार्थों के आकारों में और गुणों में यह भांत-भांत का अंतर नेचर के इसी परिवर्तन चक्र का फल है?

उत्तर - जी हां!

प्रश्न – और अस्तित्वों को छोड़कर मनुष्य के जीवन के विनाश और विकास या अच्छाई या बुराई का नेचर में क्या अटल क्रम है?

उत्तर - नेचर में विकास का जो अटल नियम जारी है, वह विनाश के अटल नियम के बराबर नहीं है, बल्कि वह आखिरकार विनाश के सिलसिले पर विजयी होता है और इसी अटल नियम के अनुसार इस दुनिया में आखिरकार मनुष्य उन्नतशील बुद्धि शक्ति को लेकर प्रगट हुआ है और वह धीरे-धीरे नेचर के जगतों का हाकिम बना है। एक-एक

मनुष्य की उन्नतशील बुद्धि शक्ति इस प्रकार की है कि उसकी उन्नति की हम कोई भी सीमा नहीं बांध सकते। इस अद्‌भुत शक्ति के जो कुछ करिश्मे थोड़े सालों में इस दुनिया में प्रगट हुए हैं और भविष्य में प्रगट हो रहे हैं, उनका शब्दों में कुछ ब्यान नहीं हो सकता, लेकिन इसके साथ ही मनुष्य के ऊपर कई प्रकार के नीच सुख अनुरागों ने अधिकार पाते जाकर और बुद्धि शक्तियों पर अधिकार करके मनुष्य को ऐसा नीच भी बना दिया है कि जिसका कोई हदो - हिसाब नहीं। अब नेचर में विकासकारी नियम अटल है और वह कभी भी बंद नहीं होता, इसलिए मनुष्य की ऐसी राक्षसी अवस्था में परिवर्तन लाने का आखिरकार कोई प्रबंध होना अवश्यक था। इसलिए वह प्रबंध हुआ और भारत वर्ष के एक बहुत उच्चकोटि के खानदान में सच्चे धर्म अवतार भगवान देवात्मा प्रगट हुए और उनके द्वारा मनुष्य की भलाई या विकास का एक नया अध्याय खुल गया। जैसे मनुष्य के प्रगट होने पर यद्यपि पशु जगत आदि कईयों ओर से उसकी उन्नति में बहुत रूकावट हुई है और बड़ी मुश्किल से लाखों वर्षों में मनुष्य पशु जगत पर विजयी हुआ है, परन्तु ऐसा कार्य अवश्य हुआ है वैसे ही देवात्मा को अपने कार्य में बहुत कठिनाईयां आई हैं और आगे के लिए आ रही हैं परन्तु इसमें कोई शक नहीं कि धीरे - धीरे भगवान देवात्मा का विकासकारी कार्य बढ़ता ही जा रहा है और झूठ और बुराई का विनाशकारी कार्य धीरे - धीरे घट रहा है।

प्रश्न – नेचर में मनुष्य जगत के विनाश और विकास के दो बड़े – बड़े भागों की मोटी – मोटी तस्वीर क्या है?

उत्तर - जैसे मानव दुनिया में एक भाग ऐसा है जो उन्नतशील बुद्धि शक्तियां रखने वाला है और इस अंग में उसकी उन्नति की कोई सीमा नहीं है, परन्तु हृदय की शक्तियों के विचार से वह नीच अनुरागों के अधिकार से बाहर नहीं जा सकता, इसलिए आखिरकार कई अंगों में विकास के सिलसिले में चलते - चलते एक सीमा के बाद उसका नीचे की ओर जाना एक अवश्यक बात है। जो लोग मोटे - मोटे पापों में ग्रस्त हैं और मोह बंधनों में फंसे हुए हैं, वह तो अधिक राक्षसी मनुष्य ही हैं और वही वह मनुष्य हैं जो भूत, चुड़ैल आदि कहलाते हैं। इससे ऊपर की श्रेणी के मनुष्य कुछ शरीफ हैं वह परलोक में जाते हैं और जा सकते हैं और फिर उनसे ऊपर जो परोपकारी हैं या विशुद्ध परोपकारी हैं वह और भी अधिक उन्नति करते हैं और विविध उच्च लोकों में जाकर हजारों या लाखों वर्ष तक कई प्रकार की उच्च बरकतें प्राप्त करते हैं। परन्तु देवात्मा की देवज्योति और उनका देवतेज न मिलने के कारण वह आत्मा के विचार से अबोधी रहते हैं। वह कई नीच अनुरागों की दासत्व के कारण आत्मिक हानि उठाते रहते हैं और आखिरकार जीवन की उन्नति पर चलने के अयोग्य हो जाते हैं। अब यदि उनमें से किसी सौभाग्यवान आत्मा का आगे विकास का रास्ता खुल भी सकता है तो वह केवल देवात्मा की देवज्योति और देवतेज के मिलने या उनके साथ कोई सच्चा उन्नतशील संबंध स्थापित होने से, इसके अतिरिक्त और किसी प्रकार नहीं।

प्रश्न – देवआत्मा की शरण में आकर जो अधिक उन्नति करने की योग्यता रखते है, उनका आखिरी परिणाम क्या होता है?

उत्तर - भगवान देवात्मा इस विषय में यह फरमाते हैं - नेचर के क्रमागत विकास से उसके अन्तर्गत के

ऐसे अजीवित और जीवित जगतों में से जो - जो अस्तित्व जहां तक उत्तम या श्रेष्ठ बनने की योग्यता रखते हैं, वह वहां तक उत्तम या श्रेष्ठ बनते हैं और इस विधि से वह परस्पर अनमेल की दशा से निकलकर समय के साथ - साथ धीरे - धीरे परस्पर मेल की ओर बढ़ते हैं और उनमें से जो - जो अस्तित्व पूर्ण मेल या पूर्ण शांति की अवस्था में पहुंच जाते हैं, उनमें एक ओर किसी प्रकार की विरोधता या टकराहट नहीं रहती, वैसे ही दूसरी ओर वह सब एक या दूसरे के विकास में सच्चे साथी और सहायक बन जाते हैं। ऐसी अवस्था में उनकी उन्नति और विकास की कोई सीमा नहीं बांधी जा सकती है। वाह! किसी मनुष्य के लिए यह कितनी असीम सौभाग्य की बात है।

इस उन्नतशील विकासकारी परिवर्तन के विषय में भगवान देवात्मा एक और जगह यह वर्णन करते हैं - देवात्मा अपनी देवज्योति में साफ देखते हैं कि नेचर के जिस विकासकारी विभाग में उन्हें प्रगट किया है, उसके द्वारा उनके परम लक्ष्य के पूरा होने के लिए जैसे अब तक उन्हें धीरे - धीरे कई प्रकार के अनुकूल हालात व सामान मिलते गए हैं, वैसे ही समय के साथ - साथ भविष्य में भी मिलेंगे, क्योंकि देवात्मा का आविर्भाव और उनका परम लक्ष्य स्वयं नहीं बल्कि नेचर के ही विकासकारी शक्तियों की लाखों वर्षों के परिवर्तन का फल है और इसीलिए उनका यह अद्वितीय लक्ष्य नेचर से है और नेचर के ही परमहितकर लक्ष्य के पूरा करने के लिए है। तब उसका न केवल उनके जीवन में बल्कि उसके पश्चात भी समय के साथ धीरे - धीरे उन्नति करना एक ऐसा अवश्यक नतीजा है कि जिस पर उनका पूर्ण विश्वास है और जिस विश्वास के तुम सबमें तुम्हारी योग्यता के अनुसार पैदा होने और बढ़ने की आवश्यकता है। इसलिए देवात्मा ने जिस आत्मिक जगत के दुर्लभ सच्चाईयों को अपनी देवज्योति में देखा और प्रगट किया है और अपने लेखों और पुस्तकों के द्वारा उन्हें प्रकाशित किया है वह धीरे - धीरे निश्चय ही इस दुनिया में फैलेगी और देवात्मा का विजय पताका देश - देश, नगर - नगर और गांव - गांव में लहराएगा और समय के साथ देवधर्म के प्रचार करने के लिए अधिकार से अधिक योग्य जन पैदा होंगे। जीवन के विकास और नेचर में विकास के कार्य की कैसी अनोखी तस्वीर।

प्रश्न - क्या उपरोक्त प्रकार के उच्चतम सौभाग्य की अवस्था देवात्मा के प्रत्येक सेवक को जो मोटे - मोटे पापों को त्याग करके उनकी शरण में आ गया हो, मिल जाती है?

उत्तर - ऐसा नहीं हो सकता वह औरों से साधारणत: बेशक उच्च श्रेणी का अस्तित्व हो जाता है परन्तु सच्चे धर्मवान या परम एकता या परम शांति की लगातार उन्नति की हालत में नहीं जा सकता।

प्रश्न - क्या हानि परिशोध करने से ऐसी अवस्था मिल सकती है?

उत्तर - नहीं, कदापि नहीं।

प्रश्न - क्या कर्त्तव्य बोधी या बाध्यता बोधी अस्तित्व बनने से मनुष्य ऐसी अवस्था को पहुंच सकता है?

उत्तर - नहीं।

प्रश्न - क्या कुछ परोपकार करने से यह अवस्था आ सकती है?

उत्तर - नहीं

प्रश्न – किसी जन की फिर कब ऐसी महा सौभाग्य की हालत हो सकती है?

उत्तर - जो जन उपरोक्त प्रकार का उच्च परिवर्तन लाभ करने के पश्चात् देवात्मा के देव प्रभावों के लाभ करने की और भी अधिक योग्यता रखते हैं, अर्थात वह उनके देवप्रभावों को पाकर अपनी स्वार्थपर्ता के पतनकारी प्रभावों के संबंध में कुछ सच्चा बोध लाभ करने के योग्य होते हैं और इसस भी आगे किसी अंश में मोक्ष पाकर किसी प्रकार के विशुद्ध परोपकार के काम के प्रति आकर्षण या इससे भी बढ़कर अनुराग लाभ कर सकते हैं। अब वह लोग जब तक एक ओर सच्चे परोपकारी रह सकते हों और फिर स्वार्थपरायण न बन जाते हों और दूसरी ओर देवात्मा के विमुख और उनके संबंध में कृतघ्न न होते हों, तब तक वह अपने-अपने आत्मा में देवआत्मा के देव प्रभावों को पाने के और भी अधिक अधिकारी हो सकते है और इससे भी आगे जो आत्मा अनअधिकारी जनों की अपेक्षा देवआत्मा के देवप्रभावों के लाभ करने की और अधिक योग्यता रखते हों अर्थात् वह अपने आत्मा में देवात्मा के पूर्णाग देवरूप की कोई झलक उपलब्ध और उनके देवप्रभावों के प्रति अपने भीतर कुछ आकर्षण भी अनुभव कर सकते हों और उन्हें अपने जीवनदाता के रूप में उपलब्ध करके और उनके प्रति अपनी स्वार्थपर्ता को देखकर उसके प्रति यथेष्ट घृणा और दुख भी अनुभव कर सकते हों और इस प्रकार उनके प्रति अपने भीतर किसी सच्चे कृतज्ञ भाव के उत्पन्न करने के भी योग्य हों।

जो जन अपने ऐसे जीवनदाता के संबंध से कटने में अपने आत्मा की मृत्यु देखते और इसलिए उनके देवरूप के संबंध में कभी भी विमुख न होते और न हो सकते हों और सदा उनके अटल विश्वासी रहते और उनके प्रति अपनी अडोल श्रद्धा रख सकते हों।

जो जन अपने अहंअनुराग से इतने शून्य हों कि फिर वह अपने किसी भी नीच अनुराग या अपनी किसी नीच गति या अपनी हीनता के विषय में अपने हृदय में बोध पाने के निमित देवप्रभावों के अपने आत्मा में प्रवेश करने में न केवल कोई विरोधी भाव न रखते हों, किन्तु उल्टा आकांक्षी हों और आकांक्षी बनकर सच्ची आत्मिक पूजा करने के योग्य बन गए हों।

और इस सच्ची आत्मिक पूजा के साधन के बिना अपना कोई दिन व्यतीत न कर सकते हों और वह सच्ची आत्मिक पूजा के साधन को प्रतिदिन निष्ठापूर्वक और उसके सच्चे फलों को अपने दैनिक जीवन के द्वारा प्रदर्शन कर सकते हों, वह उनके अनुगत और उनके सच्चे प्रचारक बन सकते हैं।

जो महा सौभाग्यवान आत्मा सच्चे आत्मबोधी बन चुके हों और उनके जीवन का मुख्य लक्ष्य आत्म सत्यज्ञान पाना, हर अंग में आत्मा मोक्ष लाभ करना, अपने जीवन का सब तरह का विकास करना और देवात्मा की पैरवी करने और उनके कार्य में सब कुछ अर्पण करने की हालत में आ जाना एक अवश्यक बात है। ऐसी अवस्था में वह जन स्वाभाविक एक ओर परोपकार के विशुद्ध अनुरागी बन जाएंगे और दूसरी ओर देवात्मा के देवरूप के संबंध में अटल विश्वासी, अटल श्रद्धावान और उनके परम उपकारों के संबंध में अटल कृतज्ञ भावधारी और उनके देवरूप के सच्चा अनुरागी

शिष्य होंगे। और ऐसी अवस्था में वह नेचर के सब विभागों में दिनों दिन एकता या परम एकता की सर्वश्रेष्ठ हालत भी लाभ करते जाएंगे और ऐसी परम शांति और परम आनंद के अधिकारी होंगे कि जिसकी कोई हद नहीं है और फिर उनके जीवन की उन्नति की भी कोई सीमा नहीं रह सकती। वाह! इससे बढ़कर किसी मनुष्य की खुशनसीबी और क्या हो सकती है, कुछ नहीं।

प्रश्न – क्या देवात्मा का सेवक बनकर या उनके कार्य में सेवाकारी अंग बनने का अधिकार पाकर भी कोई जन देवात्मा के देवप्रभावों के पाने के अयोग्य हो सकता है और धीरे–धीरे आत्मिक पतन का राही बन जाता है?

उत्तर – हां, महा दुर्भाग्य से जिन जनों के भीतर अंह अनुराग बढ़ने लग जाता है अर्थात् वह घमंड, स्वेच्छाचारिता, स्वार्थपर्ता और नीच घृणा के सब नीच भावों या उनमें से कुछ नीच भावों के दिनों-दिन अधिक से अधिक दास होते जाते हैं, वह भगवान देवात्मा की शरण में रहकर भी दिनों-दिन बुरी तरह आत्मिक पतन को प्राप्त हो जाते हैं अर्थात् दिनों-दिन उनका आत्मिक अंधकार बढ़ता जाता है, उनकी उलटी दृष्टि अधिक होती जाती है, वह दिनों दिन पतित होते जाकर भी अपने आप को बेहतरी के मार्ग का राही जानते हैं और औरों के लिए महा हानिकारक अस्तित्व बनते जाकर भी अपने आपको औरों का हितकारी संबंधी बोध करते हैं। वह स्वयं सच्चे शिक्षार्थी न होकर भी औरों के शिक्षक होने का दम भरते हैं और दिनों-दिन अधिक से अधिक दुर्बल होते जाते हैं। ओह! ऐसे जनों की कैसी महा कृपापात्र अवस्था!!

प्रथम पुरुष का सर्वप्रथम प्रयास

हमेशा सूट में नजर आने वाले जापान के राष्ट्रपति ने जब पैंट और कमीज पहनकर अपने ऑफिस में प्रवेश किया तो कार्यालय में काम करने वाले कर्मचारियों को एक बार तो अपनी आँखों पर यकीन नहीं हुआ। दिनभर चर्चा का बाजार गर्म रहा कि नियमों और अनुशासन का ध्यान रखने वाले उनके राष्ट्रपति को क्या सूझी कि साधारण पोशाक में ऑफिस चले आए। आज तक कोईजुमी को सिर्फ सूट में देखने वाले कमचारी उनके इस साधारण पहनावे को लेकर असंजस की स्थिति में थे, लेकिन जब मामला समझ में आया तो उनके प्रति राष्ट्र का विश्वास और बढ़ गया। दरअसल जापान में सारे विश्व ने क्योटो प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर किए थे, इसलिए जापान इस संधि को लेकर बहुत गंभीर था। ऑफिस में सूट पहनने की अनिवार्यता वहां पर एसी के प्रयोग को भी अनिवार्य करता है। कोईजुमी देश को एसी का उपयोग न करने की सलाह देने से पहले इसे अपने ऊपर लागू करना चाहते थे। उन्होंने सबसे पहले सूट पहनना बंद कर दिया और साथ ही एसी का प्रयोग भी। उनका अनुकरण करते हुए उनके कर्मचारियों ने भी सूट का उपयोग बंद कर दिया। आखिर में सारा राष्ट्र इस भावना से प्रभावित हुआ और अब जापान में एसी का उपयोग कम हो गया है।

श्रेष्ट कैसे बनें?

आओ, अब यह प्रश्न करें कि आत्मीयता से क्या अभिप्राय है? आत्मीयता से अभिप्राय यह है कि ऐसा अनुभव करना कि मैं नेचर का अंश हूँ इसलिए उसके विविध विभागों के वातावरण का मुझ पर निरन्तर प्रभाव पड़ता है। अनेकों से सम्बन्ध मुझे प्रभावित करता है। आत्मीयता का अर्थ ऐसी चेतना का विकास है कि मेरे पास संसार की बहुत सी चीजों का प्रभाव है। मैं प्रकृति का एक अंग हूँ अत: मुझ पर प्राकृतिक वातावरण का निरन्तर प्रभाव है। इसलिए अपने वातावरण के उन अंगों को जो मुझे निरन्तर प्रभावित करते हैं, जानना मेरे लिए परम आवश्यक है। इस अवस्था का मेरे विकास में सहयोग है और कौन-कौन से साधन मेरे विकास में बाधक हैं जिनके कारण मेरा पतन होता जा रहा है। जिसमें यह विवेक नहीं, उसमें जिनसे वह सम्बन्धित है, उनके प्रति आत्मीयता का बोध नहीं। हम जानते हैं कि किस प्रकार अत्यन्त गन्दे और अस्वास्थ्य-कर वातावरण में लोग रहते हैं और फिर भी वे सन्तुष्ट हैं। उनको ज्ञान ही नहीं है। अत: वे कभी भी इस बात की चिन्ता नहीं करते कि स्वास्थ्य की दृष्टि से गन्दा वातावरण उनके स्वास्थ्य को हानि पहुँचाता है। वे नहीं जानते कि गन्दगी और कूड़ा कर्कट किस प्रकार उन्हें हानि पहुँचाते हैं और उनके लिए रोग और मृत्यु का कारण बनते हैं और उनके अपने प्रियजनों के लिए भी। वे भयंकर और विनाशकारी अज्ञान का शिकार हैं। भौतिक वातावरण के साथ आत्मीयता अनुभव करने का अर्थ है ये जानना कि किन परिस्थितियों से उन्हें लाभ होता है और कौन से हालात उनको हानि पहुँचाते हैं। यह तभी संभव है कि यदि हम अपने शरीर के कार्य कलाप और उसकी क्रियाओं को समझें और जानें कि स्वास्थ्य की दृष्टि से हमारे लिए कैसे वातावरण लाभ कारी हैं और कौन से कारण हैं जिनसे रोग, हानि या मृत्यु आते हैं।

यही बात हमारे सामाजिक वातावरण के सम्बन्ध में सत्य है। ऐसी सामाजिक अवस्थाएं हैं जिनसे हमारा मानसिक, सामाजिक, नैतिक और आत्मिक विकास होता है। ऐसी भी सामाजिक अवस्थाएं हैं जो इस प्रकार के विकास को अवरुद्ध करती है और निरन्तर पतन की ओर ले जाती हैं। यह एक साधारण ज्ञान की बात है कि मानव बुरी संगत के कारण कितना तबाह हो जाता है। मनुष्य बुरी संगत में इस लिए बर्बाद होते हैं क्योंकि सम्बन्ध के नियम की उपेक्षा करते हैं। जब हमारा दूसरों के साथ सम्बन्ध होता है तो उनके चरित्र और व्यवहार का प्रभाव हमारे ऊपर पड़े बिना नहीं रह सकता। हम उनके मार्ग पर चल कर अपने भविष्य की उन्नति का मार्ग सदा के लिए बन्द कर लेते हैं। हम इस सम्बन्धित होने के नियम की उपेक्षा करते हैं जब हम अपने अच्छे अथवा बुरे सामाजिक वातावरण में विवेक करने में असफल रहते हैं। कुछ (बुरा) सांस्कृतिक वातावरण भी होता है जिसमें हमारा बौद्धिक विकास एक दम रुक जाता है। बौद्धिक प्रेरणा देने वाला वातावरण भी होता है। ऐसा सामाजिक वातावरण भी होता है जो बुराई और अन्ध विश्वास को केवल स्वीकार करने के लिए ही नहीं बल्कि अंगीकार करने के लिए भी बाधित करता है और जो हमें अन्धविश्वासों और धार्मिक रुढ़ियों के साथ बन्ध जाने

के लिए विवश करता है। ऐसा भी सामाजिक वातावरण होता है जो हमें बुरे रीति रिवाजों को अस्वीकार करने का नैतिक साहस प्रदान करता है चाहे वे दिखने में कितने ही पवित्र और उच्च क्यों न लगते हों। यह वातावरण हमें तैयार करता है कि हम समाज में सुधार लाने के लिए संग्राम करें।

ऐसा भी सामाजिक वातावरण होता है जो सामाजिक जीवन के कर्त्तव्यों के प्रति हमारे अन्दर वैराग्य या विमुखता और अरुचि पैदा करता है। ऐसा भी सामाजिक वातावरण होता है जो यह भावना दृढ़ करता है कि हमारे सामाजिक सम्बन्ध अनन्त परिष्कार या शोधन को प्रोत्साहित करते हैं। हमारी आत्मिक उच्चता ही हमारी सुसंस्कृति का स्तर है जो हमने आपस के सम्बन्धों में स्थापित किया है। जब हममें आत्मीयता की चेतना का अभाव होता है तो हम अच्छे या बुरे वातावरण में भेद नहीं कर सकते और अपने सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण को ऐसे ही स्वीकार कर लेते हैं जैसे कि हम अपने भौतिक वातावरण को स्वीकार करते हैं।

ये तब होता है जब स्वास्थ्य के प्रति हमारे अन्दर सजगता उत्पन्न होती और विकसित होती है। तब हम ये सीखते हैं कि कौन सा भोजन और पेय पदार्थ हमारे लिए ठीक है। किस प्रकार के स्थान पर रहना हमारे लिए ठीक है, कौन से टीके लगवा लेने चाहिए और कौन सा व्यायाम करना चाहिए। इस प्रकार हम अच्छे और बुरे वातावरण की चेतना आती है तो हम अपने लिए अच्छी से अच्छी शिक्षा के लिए चिन्तित होते हैं। कौन सा साहित्य हमें प्रेरणा प्रदान करेगा, कौन सा सर्वोच्च अनुसंधान केन्द्र है। जब हम अपने आत्मा के प्रति जागृत होते हैं तो हमें आत्मिक स्वास्थ्य के बारे में जानने की आकांक्षा होती है। कौन से धर्म के द्वारा हमें पोषण मिल सकता है? जब तक हमारे अन्दर अपनी आत्मा के प्रति चेतना नहीं जागती, हम कभी भी यह चिन्ता नहीं करते कि हमारा सम्बन्ध किस धर्म से है। तब तक हम इसी भ्रान्ति में रहते हैं, कि सब धर्म समान हैं, अच्छे हैं, सत्य हैं। यह ऐसा ही है जैसे यह कहना कि सभी भोजन अच्छे हैं और पोषक भी हैं। सब प्रकार का भौतिक वातावरण हमारे स्वास्थ्य के लिए अच्छा है। इस अन्ध विश्वास पर हम टिके रहते हैं कि सब धर्म सच्चे और अच्छे हैं क्योंकि हमें अपने आत्मा की भलाई का ज्ञान ही नहीं है।

इसलिए आत्मीयता को अनुभव करने के लिए यह आवश्यक है कि मैं यह विश्वास रखूं कि मैं उस वातावरण के द्वारा निरन्तर प्रभावित हो रहा हूँ जिसके साथ मेरा सतत् सम्बन्ध है। अत: अपने लिए अनुकूल और प्रतिकूल वातावरण की विभिन्नता को मैं समझना सीखूं कि कौन सा वातावरण लाभदायक है और कौन सा हानिकारक है। यदि आत्मीयता के लिए यह आवश्यक है कि मैं अपने वातावरण को जानूँ और उस वातावरण का त्याग करूँ जो मुझे हानि पहुँचाता है और ऐसे वातावरण से अपने आप को सम्बन्धित कर लूँ जो मेरे लिए लाभदायक है तो यह आवश्यक है कि मैं अपने शरीर और आत्मा के सम्बन्ध में उच्चतर बोध प्राप्त करूँ। जब शरीर और आत्मा के स्वास्थ्य के प्रति मेरी चेतना अविकसित है और मैं अपने चारों ओर के वातावरण के प्रति उदासीन हूँ, उसका अर्थ यह है कि मैं वातावरण के साथ चाहे वह भौतिक वा सामाजिक हो, आत्मीयता का अनुभव नहीं करता।

स्वस्थ वातावरण प्राप्त करने के लिए चिन्तित

होने का क्या अर्थ है? इसका अभिप्राय है कि मैं वातावरण के मूल्य को समझूं। जब मैं इसका उच्चतम मूल्यांकन करता हूँ तो मैं उसकी विशिष्टता को स्वीकार करता हूँ। यदि हम खुली हवा के मूल्य को समझें तो अपने निवास स्थान खरीदने के लिए अधिक राशि देने के लिए तैयार हो जायेंगे यदि यह किसी खुली बस्ती में है। इसका अभिप्राय यह हुआ कि धन की अपेक्षा हम ने खुली हवा को अधिक मूल्यवान समझा। मूल्यवान क्या है, इसकी पहचान करने का यही अर्थ है। मैं एक टी. बी. के रोगी को जानता हूँ, उसे डाक्टर ने किसी पर्वतीय स्थान पर स्वस्थ होने तक रहने के लिए कहा। उसने अपना निवास एक पर्वतीय स्थान पर परिवर्तित कर लिया और मृत्यु की तुलना में अपने कारोबार का घाटा स्वीकार किया।

सब ऐसा करने के लिए तैयार नहीं होते। वर्षों बाद जब मैं उसे मिला तब वह अभी वहीं था। अब वह स्वस्थ था। उसने जलवायु को इतना अधिक मूल्यवान समझा कि अपने स्थान पर लौटने का विचार ही त्याग दिया। एक और नौजवान था जिसने अपनी बदपरहेजियों के कारण अपने स्वास्थ्य को बहुत हानि पहुँचा ली थी। वह देव समाज के सम्पर्क में आया और उसके स्वस्थ वातावरण से वह परहेजगार बन गया। इसने उसे एक स्वार्थी मनुष्य ने निस्वार्थी व्यक्ति बना दिया। उसने अपने इस परिवर्तन को इतना कीमती समझा कि देव समाज से जीवन भर अपना सम्बन्ध रखा और वह इसका सक्रिय कार्य कर्त्ता बना। उसने अन्य लोगों के भी जीवन में उच्च परिवर्तन लाने की भरसक सहायता की।

आत्मीयता का अभिप्राय केवल वातावरण का मूल्यांकन करना ही नहीं है जो हमारे कल्याण में सहायक होता है, अपितु घातक वातावरण को समाप्त करने में सहायक होना भी है। जो पवित्र वातावरण का मूल्य आँकते हैं, वे अपना कर्त्तव्य समझते हैं और यदि वे अपने देश वासियों के प्रति आत्मीयता का अनुभव करते हैं तो वे जितनी गन्दी बस्तियाँ हैं उनको समाप्त करने के लिए आवाज़ उठाते हैं और धुँआ निकालने वाली सब फैक्ट्रियों आदि को नगर से बाहर ले जाने के लिए प्रयत्नशील होते हैं। सभी प्रकार के समाजवाद से गिरे पड़े लोगों के लिए आत्मीयता की भावना भरी है और इस प्रकार की अन्यायपूर्ण संस्थाओं को लोगों में जो निर्धनता, रोग और अज्ञान को अधिक बढ़ाती हैं, परिवर्तन करने का जोश है।

ऐसे सामाजिक कार्य कर्त्ता हैं जो मजदूर लोगों को शराब बन्दी, धूम्रपान त्याग आदि की प्रेरणा देते हैं और उन्हें शिक्षित करते हैं कि अपनी स्त्रियों को चरित्रहीन कार्यों के लिए न छोड़ें इत्यादि। वह पथभ्रष्ट स्त्रियों के सुधार का काम करते हैं और ऐसी सभी अवस्थाओं से संघर्ष करते हैं जिनके कारण स्त्री जाति को वेश्यावृत्ति अपनानी पड़ती है। कुछ समाज के पिछड़े क्षेत्र में स्वच्छता, सुन्दरता और सभ्यतापूर्ण जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा देने के लिए कार्य करते हैं।

अत: आत्मीयता का अनुभव करने का अभिप्राय है कि जो कुछ वातावरण में अच्छा है उसे सुरक्षित रखना और जो बुरा है और अवाँछनीय है, उसके परिवर्तन के लिए कार्य करना। अपने माता - पिता से आत्मीयता के अनुभव करने का अभिप्राय है कि उनकी आवश्यकताओं, भलाई और प्रसन्नता को अनुभव करना। उनकी सद्इच्छाओं को जानने के लिए

फिकरमन्द और उत्साही होकर उनकी पूर्ति के लिए कार्य करना। हमें इससे भी आगे जाने की आवश्यकता है। हो सकता है कि हम अपने माता - पिता की कमियों, बुरी आदतों और उनके अविकसित विचारों के कारण दुख का अनुभव करें। कुछ बच्चों ने अपने माता - पिता को श्रेष्ठ जीवन अपनाने में सहायता दी है।

यह इतिहास की बात है कि जवाहर लाल नेहरू ने अपने पिता श्री मोती लाल नेहरू को एक शराब उद्योग में अपने भाग (हिस्से) को समाप्त करने की प्रेरणा दी और उन्हें आनन्द और भोग विलास के जीवन को त्याग कर सेवा का मार्ग अपनाने के लिए प्रेरित किया। मैं ऐसे कई पुत्रों को जानता हूँ जिन्होंने अपने पिता से रिश्वतखोरी और शराब पीने की आदत का छुड़वाया है। स्नेह, समझ और उच्च भावनाओं से भरकर अपने माता - पिता को श्रेष्ठता की ओर अग्रसर किया जा सकता है। जो आत्मीयता अपने माता - पिता के साथ होनी चाहिए, वही आत्मीयता अपने बहन - भाईयों, अपने देश वासियों और मनुष्य मात्र के साथ अनुभव करनी चाहिए। अच्छी भावना वनस्पति जगत, पशु जगत, और भौतिक जगत के सम्बन्ध में भी होनी चाहिए। जो लोग अपने आपको पशु जगत के साथ सम्बन्धित अनुभव करते हैं, वह उनके कानूनी अधिकारों की सुरक्षा करने और उनके साथ शालीन और अच्छा बर्ताव करने और उनकी नई लाभकारी, सुन्दर नस्लों की वृद्धि व विकास के लिए अपना जीवन समर्पण करते हैं। इसी प्रकार वे लोग जो वनस्पतियों के वंश के सुधार के लिए और उनके नये वंशों की वृद्धि के लिए कार्य करते हैं, वे वनस्पति जगत के विनाश के विरुद्ध आन्दोलन करते हैं, वे इस प्रकार के बागों का निर्माण करते हैं कि जिनमें पेड़ - पौधों को विशेष प्रकार का व्यवहार मिलता है। जो लोग अपनी आत्मीयता भौतिक जगत के साथ अनुभव करते हैं वे प्राकृतिक सम्पत्ति के अन्धाधुंध शोषण के विरूद्ध दृढ़तापूर्वक आवाज़ उठाते हैं। ऐसे लोग जो कुछ भी प्रकृति में सुन्दर है, उसकी सुरक्षा के लिए प्रयत्न करते हैं। वे इस बात के लिए प्रयत्नशील रहते हैं कि सरकार अच्छी भूमि और उस पर स्थित प्राकृतिक सौन्दर्य की रक्षा करे और सुन्दर ऐतिहासिक भवनों और कलाकृति की पूर्ण रूप से देखभाल करें।

जो कुछ भी हमें आज सुन्दर रूप लाभकारी मानव जीवन में, पशु जगत में, वनस्पति जगत में और भौतिक जगत में दिखाई देता है वह सब उन लोगों के कारण है जिन्होंने इन सब जगतों से आत्मीयता का सम्बन्ध समझा है, और उनमें जो भी बुराई देखी उसको दूर करने का गहरा फिक्र किया। उनमें जो मूल्य थे उनको उन्होंने सुरक्षित किया और परिवर्तन, संशोधन तथा व्यवहार कौशल द्वारा उनमें नये मूल्यों की वृद्धि की और उनको नया रूप और सुन्दरता दी ताकि वे सब के लिए आनन्ददायक प्रमाणित हों।

यह तब होता है जब हम चारों जगतों से आत्मीयता का सम्बन्ध स्थापित करते हैं कि जो हमारे से सम्बन्धित हैं। इस प्रकार हम अपने में श्रेष्ठता का विकास करते हैं।

संक्षेप में सम्बन्धित अनुभव करने का अभिप्राय है आत्मीयता का भाव रखना, अच्छे और बुरे वातावरण में अन्तर को पहचानना चाहे वह भौतिक हो, शारीरिक हो, सामाजिक हो या सांस्कृतिक हो और उनकी सुरक्षा के लिए तत्पर रहना, उनमें श्रेष्ठता को उजागर करना तथा प्रत्येक बुराई को समाप्त करना।

साथी – सेवकों का सम्बन्ध

गुरु महाराज ने साथी - सेवकों के परस्पर सम्बन्ध के विषय में अपनी अद्वितीय - ज्योति की लक्ष्मण रेखा इस प्रकार खीचीं है:- **"जो आत्मा जहां तक गाढ़ रूप से मेरे साथ जुड़ा हुआ है, वहां तक उसके लिये आवश्यक है कि वह कुल ऐसे जनों को जो मेरे साथ जुड़े हैं, और जिन पर जहां तक मेरा अधिकार हो चुका है, सन्मान व प्यार की दृष्टि से देखें और अपने को उनका और उनको अपना समझे। परन्तु यदि किसी की यह गति नहीं, वह मेरा नहीं हो सकता।"**

जिस प्रकार बहन भाईयों के अन्दर एक माता पिता का, एक गोद का, एक खून का और एक मां के दूध का सांझा सूत्र होता है; जो उन्हें एक दूसरे का साथ जोड़ने के लिए, एक दूसरे का होने के लिए और एक दूसरे के दु:ख के भागीदार होने के लिये प्रेरित करता और मजबूर करता है, उसी प्रकार साथी सेवकों के भीतर भी एक आद्वितीय देवात्मा गुरु का, एक आद्वितीय शिक्षा का, एक ही नीचता से निकलने और उच्च जीवन पाने के मनोरथ का और उच्च परिवर्तनकारी एक आद्वितीय देव - प्रभावों का अर्थात् देव - ज्योति और देव तेज की पवित्र सांझ के सूत्र का रिश्ता है। प्रत्येक सेवक के भीतर पूजनीय भगवान् की विलक्षण देव ज्योति पहुँचती है, प्रत्येक सेवक के भीतर उनके देव तेज का अमल होता है। गुरूमहाराज की ज्योति और देव तेज को ग्रहण करके ही कोई जीवन परिवर्तित होता है, कोई आत्मा सेवक बनने के लिए तैयार होता है और बनता है। प्रत्येक सेवक में गुरू महाराज के देव रूप का कुछ - न - कुछ अंश वर्तमान होता है, देवात्मा के देव प्रभावों की गहरी छाप होती है। देवात्मा का विशेष कार्य वर्तमान होता है। देवात्मा का धर्म रूप जहां तक आत्मा में प्रवेश करता है, वह तकाजा करता है कि देव रूप से प्राप्त उस अंश को प्रत्येक सेवक सत्कार, स्नेह, सद्भाव, सम्मान् और श्रद्धा की आँखों से देखें उस अंश को गुरू की तरह अपना समझे, अपने आपको उस गुरू अंश का, जो प्रत्येक सेवक के भीतर उच्च - परिवर्तन के रूप में, देव प्रभावों के रूप में बैठा है, समझो जो ऐसा नहीं करता वह देवात्मा के रूप को ही अपमान की टांग मारता है। वह देवात्मा का नहीं हो सकता, जिसका दिल देवात्मा के प्रभावों के कार्य के आगे नहीं झुकता और अश - अश नहीं करता। जिसकी श्रद्धा इस खुराक से तृप्त नहीं होती, वह न किसी सेवक के लिए सगा है और न देवात्मा को ही कुछ समझता है। वह केवल और केवल अपने नीच भावों का सगा है। देवात्मा सत्गुरू का होने के लिए, उनके देव प्रभावों से प्रभावित होने के लिए, देवात्मा की शरण के आद्वितीय अधिकार को सफल करने के लिए सब साथी - सेवकों का हो जाना आवश्यक है। जो साथी सेवकों से सम्बन्ध अनुभव नहीं कर सकता, वह आत्मा देवात्मा का भी नहीं हो सकता।

साथी सेवक एक पेड़ के ही फल और पत्ते हैं, उन की रूह के रग रेशे में एक ही पेड़ का जीवन रस प्रवाहित है। इसलिये वह एक दूसरे के बेहद

निकटवर्ती और अपने हैं। परस्पर स्नेह और सत्कार के पात्र हैं।

सेवकी का महा अधिकार कब प्राप्त होता है? सेवकी के ताज का कोई मनुष्य कब अधिकारी होता है? जब: -

1) कोई आत्मा मिथ्या गुरू मिथ्या देवी - देवताओं को त्याग करके सत्य - उपास्य देवात्मा का विश्वासी बनता है।

2) जब कोई सौभाग्यवान आत्मा अपने जीवन में आठ मोटे - मोटे पापों से विरत होने और सारी उमर विरत रहने का चाहवान हो जाता है।

उपरोक्त सत्य और शुभ की मूल शर्तों को पूरा करके कोई मनुष्य देवात्मा के सेवक - मण्डल में शामिल हो जाता है। इस प्रकार जब तक वह शर्ते पूरी रखता है, वह सारे सेवक - दल के स्नेह, सम्मान, सुझाव और प्यार का अधिकारी बन जाता है।

मनुष्यात्मा अधूरी गठन रखता है। प्रत्येक मनुष्य में कमियां हैं, उसकी गठन दोष - पूर्ण है। फिर सेवक भी इस नियम से बाहर नहीं। उनसे भी समय - समय पर अवज्ञाएं होंगी। बड़ी - से - बड़ी गल्तियां करके भी उपरोक्त दो शर्ते पूरी करके एक - एक सेवक सन्मान और स्नेह का पात्र है। सेवक होना गल्तियों की तुलना में अधिक वजनदार है। उसकी गल्तियाँ दर गुजर करना, प्यार और हमदर्दी से उनको सुधारना, परन्तु उसको अपना ही जानना, प्रत्येक मनुष्य का फर्ज है।

उपरोक्त दोनों शर्तों अर्थात् मिथ्या और मोटे - मोटे पापों से विरत रहने वाला व्यक्ति किसी सेवक या सेवकों के समूह का शत्रु नहीं हो सकता। किसी मिथ्या और पाप से रहित व्यक्ति को, गुरु की थोड़ी बहुत सेवा करने वाले को विरोधी, शत्रु, गैर देखना किसी दोष पूर्ण सोच का ही काम हो सकता है। सेहतमंद सोच ऐसी चिन्ता भी नहीं कर सकती।

प्रत्येक सेवक बड़ा हो या छोटा, सत्कार के कैसे योग्य है, यह हमें फरिश्ता तहसीलदार सरदार सावन सिंह जी की वह घटना बता सकती है, जिस प्रकार उन्होंने कचहरी का काम छोड़कर, कहलाने वाले हरिजन - जाति के सेवक की परिक्रमा की और कहा "जिथे मिले गुरु सिखड़ा झुक - झुक लागूं पाए।" यह तो साथी - सेवकों के प्रति सत्कार का आदर्श है। जो साथी - सेवकों को स्नेह प्यार और सन्मान नहीं दे सकता, अपनत्व नहीं दे सकता, वह गुरु की निकटता भी हासिल नहीं कर सकता।

धर्म की दुनियां में सेवकों का दर्जा दूसरे दर्जे पर है, पहला दर्जा गुरु - महाराज का है। सेवकों के द्वारा ही गुरु की ज्योति हम तक पहुंची है, इसलिए वह हमारे उपकारी और हितकारी है, बहुत ही कीमती हैं।

"सबसे से बढ़कर वह सम्बन्धी, उच्च जीवन जो देवें दान।" साथी - सेवक इसलिए भी उपकारी हैं कि वह बुनियादी पत्थर बनकर काम आए हैं। उन्होंने बड़े - बड़े त्याग और समर्पण करके गुरुदान के प्रवाह को जारी रखा है और आगे पहुँचाया है। कईयों ने टी. बी. लगवा ली और जल्दी इस दुनियां से कूच कर गए, परन्तु गुरु की जलाई शमा को रौशन रखा। कईयों ने पूजनीय भगवान की पवित्र जात की सेवा करके जीवन सफल कर लिया। कईयों ने डिब्बा दान मांगा, किसी ने स्त्री होकर सुबह बच्ची का देहांत हुआ, तो उसी शाम को दान मांगा, गुरु की रिक्शा खींची, उच्च - से - उच्च परिवर्तन पैदा किए, कईयों ने उच्च लेखों और पुस्तकों का

खजाना दिया। कई उच्च, भरोसे योग्य, कुर्बानी और वफा की ठोस मिसाल बनें। कईयों ने ज़मीनें और मुरब्बे दान में दिए। कईयों ने समाज की सम्पति को बढ़ाया, कईयों ने अनोखे गीत लिखे, कईयों ने श्रद्धा भाव से भरकर गीतों का गान किया। कईयों ने स्त्रियों, कईयों ने पुरुषों की शिक्षा का ब्रत धारण किया। कईयों ने संस्थाएं कायम की और उन्नत की। कईयों ने पुरुष होकर पर-पुत्रियों की रक्षा करके गुरु गौरव को बढ़ाया। कईयों ने प्रतिज्ञा-पालन, ईमानदारी-पवित्रता के अनोखे दृष्टान्त पैदा किए। कईयों ने उच्च-साधन और आत्म-चिन्तन के साधन के रिकार्ड कायम किए। उक्त उच्च-जीवन का खमीर पैदा हुआ, जिस से मरती हुई आत्माएं बची। ऐसे साथी-सेवकों का होना हमारे लिए एक तरफ फख़्र की बात है, दूसरी तरफ उनके लिए सत्कार और मुहब्बत से भरे रहना हमारा पाक कर्त्तव्य भी है।

साथी-सेवकों के साथ सम्बन्ध खराब करने वाले हमारे अपने भीतर के ही नीच भाव हैं। विशेष रूप से हमारा स्वार्थ, हमारा घमण्ड, नीच-घृणा और मान-सम्मान का अनुचित अधिकार आदि किसी भी उक्त नीच भाव पर चोट लगने से हमारे भीतर नीच घृणा पैदा होती है। इससे हम फट जाते हैं, मुँह मोड़ लेते हैं, दूरी पैदा होती है, शक्ल देखना नहीं चाहते, बात करना नहीं चाहते, दूसरों की वर्तमानता को सहन नहीं कर सकते।

गुरु-महाराज (साथी सेवकों को) नीच-घृणा करने के सम्बन्ध में अपनी ज्योति देते हैं :-

"किसी भी मनुष्य को चाहे वह तुम्हारे साथ कितना ही बुरा सलूक करे, घृणा कभी नहीं करनी चाहिए।"

"मनुष्य के शारीरिक-जीवन को जैसे संखिए आदि का ज़हर नष्ट कर देता है, उसी प्रकार आत्मा के जीवन को उसकी नीच-घृणाओं का ज़हर नष्ट कर देता है।"

"नीच-घृणा जहरे कातिल हैं। यह आत्मा का कुछ भी बनने नहीं देती। धर्म अभिलाषी जनों के भीतर सहन-शीलता की इतनी शक्ति आनी चाहिए कि वह दूसरों से बुरा सलूक पाकर; उससे फट न जाएं; उल्टा उसका भला करना चाहें, उसके लिए भी हमदर्दी का भाव पैदा हो तो ही दूसरों के हृदय पर असर होता है।"

साथी-सेवकों का घृणा करना अद्योगति है, महा अनर्थ है। इससे बचने की अधिक-से-अधिक जरूरत है।

कर्मचारियों और प्रचारकों के परस्पर सम्बन्ध के विषय में पूजनीय भगवान ने अपनी विशेष ज्योति में लक्ष्मण रेखा इस प्रकार खींची है :-

"जिन्होंने अपने आप को मेरे मिशन के लिए भेंट करके, मेरी खुशखबरी के प्रचार और आत्माओं के उद्धार और उनको मेरे साथ जोड़ने का व्रत लिया हो, उनके लिए यह विशेष रूप से आवश्यक है कि वह अपनी पुरानी, विकार-भरी, अपवित्र-अवस्था से पूर्ण मोक्ष लाभ करके इस बात का सबूत देवें कि वह मुझे अपनी कुल बात-चीत और कुल चाल-ढाल और बर्ताव के द्वारा सबसे बढ़कर स्थान देते हों और मेरे पीछे मेरे प्रचारकों को प्रेम करते हों और उनके साथ किसी प्रकार का द्वेष-ईर्षा आदि न रखते हों और किसी को अपने से बेहतर और उन्नत होता देखकर कुढ़ते नहीं एवं खुश होते हों और अपने नाम या पद या आराम या किसी और बात को सामने रखकर मिशन की सच्ची

महिमा और उसके प्रबन्ध में कोई खराबी या विघ्न न पैदा करते हों।

उक्त देव - वाणी में गुरु महाराज ने फरमाया है: -

1. प्रचारकों और कर्मचारियों के लिए यह विशेष रूप से आवश्यक है कि वह अपनी - अपनी जन्म - जात नीच - प्रकृति से मुक्त हो गए हों, विशेषकर ईर्षा, द्वेष वा नीच घृणा से बहुत ऊपर उठ गए हों।

2. वह कुल प्रचारकों को जिन्होंने गुरु मिशन में जीवन भेंट किए हुए हैं, प्यार करते हों। जो साथी प्रचारकों को प्यार नहीं करता, वह गुरु का सम्मान नहीं करता।

3. वह किसी प्रकार का द्वेष या ईर्ष्या - भाव न रखते हों।

4. किसी को किसी पहलू में बेहतर व्यवस्था में देख कर सड़ते - कुढ़ते न हों।

5. वह अपन नाम - पद, सुख सवाद के इतने अनुरागी न हों कि उनकी खातिर वह साथी - कर्मचारियों के मान, पद, व अधिकार का ही अपहरण करने से न रुक सकते हों।

6. ऐसी अवस्था रखकर कर्मचारी मिशन के इन्तजाम में बेहद खराबी पैदा करके बेपनाह हानि कर सकते है।

7. श्रद्धेय श्रीमान् देवत्व सिंह जी से महान कम ही कर्मचारी थे। उनसे प्राय: सब कर्मचारी नीचे थे। फिर भी वह हर कर्मचारी के कमरे के आगे जाकर सुबह के समय सिर रखकर प्रणाम करते थे। यह उनका उच्च रुहानी स्वस्थ कर साधन था। उन्होंने किसी कर्मचारी को पछाड़ने या उसके अधिकार का अपहरण करने का कभी कोई संग्राम नहीं किया। वह उपरोक्त ईर्ष्या - द्वेष से मुक्त थे। ईर्ष्या द्वेष के भाव रखकर कर्मचारी खाना - जंगी का शिकार हुए बिना नहीं कर सकते। वह एक वा दूसरे दोष की आड़ के पीछे सारी समाज के गौरव, प्रबन्ध व कारज की महा - हानि किये बगैर नहीं रह सकते।

8. साथी - सेवकों का सम्बन्ध बहुत स्नेह व प्यार - मयी होना चाहिए। कर्मचारियों का सम्बन्ध जिस प्रकार परस्पर प्यार, श्रद्धा, कृतज्ञता व शुभ कामना से भरा होना चाहिए। उसका अनुमान करना कठिन है।

9. गुरु महाराज ने फरमाया है कि किसी को सेवकी से स्थगित करने से पहले प्रबन्ध यह बता सकता हो कि उससे एक - एक सेवक की रक्षा के लिये क्या - क्या यत्न किये हैं। अगर कोई यत्न किये बगैर निष्कासित किया जाता है, तो यह मनुष्यात्मा की नीच - भावनाओं की लीला है।

10. "जब तुम किसी को निकालो, तो तहकीकात करके निकालो और यह नोट हो कि तुमने उसकी बेहतरी के लिए क्या - क्या यत्न किये हैं।"

बगैर शुभ - यत्न करने के किसी का निष्कासन आम करके नीच - घृणा का ही प्रकाश है। आज - कल चल रहे साथी - सेवकों के सम्बन्ध में मुबारक पाठ - विचार के दिनों में हमें अपने आपस के सम्बन्ध में अधिक - से - अधिक मिठास उत्पन्न करके एक दूसरे को मुहब्बत व प्यार की आँखों के साथ देखने की जरूरत है, जो ऐसा कर सकेगा, वह ही गुरु का होगा। जो ऐसा नहीं कर सकेगा। वह केवल अपने आप का ही होगा।

(एक सेवक)

अपनी कमी व भूल की स्वीकृति नितान्त आवश्यक

1. मैं अपने इस अनुकिर्त्त व्यवहार पर शर्मिन्दा हूँ:

जब पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने आजादी मिलने पर प्रधान मंत्री का कार्यभार संभाला, तो उन्होंने कुछ पुराने अपने अफसर मित्रों से काम काज के बारे में सलाह पूछी, उन्होंने पण्डित नेहरू को बताया कि कैबिनिट सैक्रेटरी रंगाचार्य साहब बहुत योग्य आदमी हैं। जो कुछ आप जानना चाहते है, उस के बारे में वह सब कुछ बता देंगे। पण्डित नेहरू ने रंगाचार्य को फोन किया और उनको अपने कामों में आवश्यक विषयों पर सलाह लेने के लिए बुलाया। पण्डित नेहरू ने चपरासी को कह दिया कि जब तक वह बातचीत करते हैं, तब तक अन्दर कमरे में किसी को न आने दिया जाए।

पण्डित नेहरू ने श्री रंगाचार्य के कमरे में आने पर खड़े होकर उसका सम्मान किया और दोनों की बातचीत शुरू हो गई। जब बातचीत चल रही थी, तो किसी एक विषय पर पण्डित नेहरू ने कुछ असहमति प्रगट की और मेज पर जोर से कई मुक्के मारे। श्री रंगाचार्रीय ने अंग्रेजों के साथ जो बहुत अनुशासित लोग थे काम किया था। वह अपनी कुर्सी से खड़े हो गए और कहा प्रधान मंत्री महोदय, यह कोई राजनीतिक मंच नहीं है, यह भारत के प्रधान मंत्री का दफ्तर है, जहां किसी को मेज पर मुक्के मारने का अधिकार नहीं। पण्डित नेहरू स्वयं बहुत अनुशासन प्रिय थे उन्होंने अपनी ऐसी क्रिया पर बार-बार अफसोस का इज़हार किया। और कहा कि मैं अपनेइस अनुचित व्यवहार पर शमिन्दा हूँ।

2. मैं अपने शब्द को वापस लेता हूँ और माफी चाहता हूँ :-

लोक सभा के स्पीकर श्री शिवराज पाटिल ने देखा कि श्री सूर्यनारायण यादव उनकी ओर बढ़ रहे हैं, और कह रहे हैं कि आपको मेरी बात सुननी पड़ेगी। स्पीकर साहब ने यादव साहब को बार-बार कहा कि वह अपनी सीट पर बैठ जाएं। मैं इस प्रकार की गुंडागर्दी को सहन नहीं करूंगा। उन्होंने यादव साहब को चेतावनी दी कि उनके विरुद्ध कारवाई की जाएगी यदि उन्होंने अपना अनुचित व्यवहार जारी रखा। उन्होंने यादव साहब को बताया कि लोक सभा में आपको कई अवसरों पर बोलने की इजाजत दी जाती रही है। किन्तु कुछ क्षणों के बाद श्री पाटिल ने महसूस किया कि उनको गुडांगर्दी का शब्द इस्तेमाल नहीं करना चाहिए था। उन्होंने कहा "न डडद्व ह्मश्रह्मह्म४. न २द्वह्लद्ध त्रह्मडड२श्रह्मत्र," (मुझे अफसोस है मैं अपने शब्द वापिस लेता हूँ)

3. मुझे गहरा शोक है, मेरे देश ने आपके देश पर बहुत जुलम किए।

जब दूसरा विश्व युद्ध हुआ था तो जापान ने चीन पर बड़े जुल्म ढाए थे। अक्तूबर सन् 1992 में जापान के बादशाह अकीहीतो चीन में गए थे, तब उन्होंने बेजिंग में चीन के राष्ट्रपति यांग शांग कुन से इसबात पर अपने गहरे दुख का प्रकाश किया कि पिछले विश्व युद्ध में जापान में चीन के लोगों को बहुत कष्ट और मुसीबतों में डाला था। उन्होंने कहा था - वह दोनों देशों के परस्पर के सम्बन्ध के लम्बे इतिहास में एक ऐसा अभागा समय आया कि जिसमें हमारे देश ने चीन के लोगों पर बहुत जुल्म किए। इसका मुझे बहुत गहरा शोक है। जब युद्ध

खत्म हो गया था, तो जापान के लोगों को अपने ऐसे जालिमाना व्यवहार पर बहुत तकलीफ हुई थी। और उन्होंने चाहा था कि ऐसा युद्ध कभी न हो और दोनों देश परस्पर शान्ति से रहें। चीन के राष्ट्रपति जापान के बादशाह की यह बात सुन कर बहुत प्रसन्न हुए। और उन्होंने जापान के बादशाह का ऐसे मेहरबानी के शब्दों के लिए धन्यवाद किया।

इस विश्व युद्ध में चीन पर जापान के हमले के कारण लगभग एक करोड़ आदमी मारे गए थे, चीन के दिल पर यह जख्म बहुत गहरा था। जिस पर जापान के बादशाह ने कुछ न कुछ मरहम लगाने का काम किया।

4. हम अपने बुरे बर्ताव पर शोक का प्रकाश करते हैं :

दक्षिण अफ्रीका में लगभग तीन करोड़ काले रंग के आदमी रहते हैं, वहां अंग्रेज लोगों की संख्या लगभग पच्चास लाख है। वर्षों से दक्षिण अफ्रीका में काले रंग के लोगों पर अंग्रेजों की हकूमत रही है। वहां के राष्ट्रपति श्री डी. कलेरक ने, काले लोगों के प्रति अंग्रेजों के दिलों में जो घृणा थी, उसके विषय में अपने शोक का प्रकाश किया है और कहा एक बहुत लम्बे अरसे तक हम इस बात का स्वप्न लेते रहे कि हमारी कौम अलग है और काले रंग के लोगों की कौम अलग है। लेकिन यह बात बिल्कुल साफ है कि यह स्वप्न था माया नहीं हो सकता। हम अपने बुरे बर्ताव पर शोक का प्रकाश करते हैं। उन्होंने कहा हमने गलतियां की है। हमने अनेक बार गुनाह किए हैं, हम इससे इनकार नहीं करते। यह पहली बार है कि दक्षिण अफ्रीका के किसी अंग्रेज नेता के गोरे और काले लोगों के बीच में जो खाई बरसों से चली आ रही थी, उस पर अपने शोक का प्रकाश किया है।

गोरे रंग के लोगों का काले रंग के लोगों के प्रति जो घृणासम्पन अलगवाद की पालिसी रही है, उसके विरुद्ध गांधी जी ने अपने दक्षिण अफ्रीका रहने के दिनों में बहुत संघर्ष किया था और नेलसन मण्डेला इस बुराई को दूर करने के लिए 28 वर्ष जेल में भी रहे और आखिरकार दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति ने इस बुराई के रूप में महसूस किया और काले रंग के लोगों के साथ गोरे रंग के लोगों का व्यवहार पहले से बेहतर हो रहा है।

5. इस मामले में केवल क्षमा याचना से काम नहीं चलेगा:

सन् 1989 में केरल के एक पत्रकार पर जो हमला हुआ था और उस की प्रापर्टी और प्रैस को जो हानि पहुंचाई गई थी, क्योंकि उसमें पुलिस और सरकार के विरुद्ध अखबार में कुछ लिखा था, इस पर सुप्रीम कोर्ट ने केरल सरकार के तीन बड़े अफसरों को हुक्म दिया था कि इस सारी कारवाई की छानबीन की जाए। लेकिन इन अफसरों के तीन साल तक कोई कारवाई नहीं की, जिस पर सुप्रीम कोर्ट ने उनको अदालत में हाजिर होने का हुक्म दिया और कहा कि तीन साल तक अदालत के आदेश को पालन न करने के सिलसिले में क्यों न उन पर मानहानि का जुर्म लगाया जाए।

एक जज ने तो यहां तक कहा कि मेरे तैतालीस वर्ष के लम्बे तजरबे में बड़े अफसरों की इस प्रकार की लापरवाही और आज्ञा उलंघन का यह पहला गम्भीर मामला है जो देखने में आया है। तीनों अफसारों ने सुप्रीम कोर्ट से क्षमा याचना की है परन्तु अदालत का कहना है कि इस मामले में केवल क्षमा याचना से ही काम नहीं चलेगा। सारे रिकार्ड को देख कर अदालत जो कारवाई इन अफसरों के विरुद्ध करना चाहेगी, वह करेगी।

यह चुप-चाप तमाशा देखने वाले

भगवान देवात्मा 23 वर्ष की आयु में लाहौर पधारे थे। उन दिनों ब्रहम समाज के सुधारवादी कामों को देख कर वह उसके मैम्बर उपदेशक और फिर आचार्य बने। उन दिनों केशव चन्द्र सैन ब्रहम समाज के सब बड़े नेता थे। उन्होंने ब्रहम समाज के नियमों को तोड़ कर अपनी बेटी की शादी की। इसका ब्रहम समाज में बहुत रौला हुआ। ब्रहम समाज दोफाड़ हो गई। लाहौर में साधारण ब्रह्म समाज रही जिसके कर्ता-धर्ता उन दिनों भगवान देवात्मा थे। साधारण ब्रहम समाज के लोगों ने केशव बाबू की गलत बातों को प्रगट करना शुरू किया। मगर केशव बाबू और उनके साथियों ने किसी की एक न सुनी। वह नहीं चाहते थे कि जो कुछ मनमानी कारवाईयाँ वह कर रहे हैं, उनमें कोई रोक टोक पैदा करे। केशव बाबू और उनके साथियों ने अपने विरोधियों को गालियां देनी शुरू की। कई समझदार लोगों ने देखा कि केशव बाबू अपनी कई गलत बातों के द्वारा ब्रहम समाज का सत्यानाश करना चाहते हैं। कुछ लोग थे जो केशव बाबू की गलत बातों को गलत देखते और प्रगट करते थे। भगवान देवात्मा ने लिखा था कि जिन लोगों के केशव बाबू की गलत बातों के विरुद्ध अपनी राय का इजहार किया है, और उनकी विरोधिता की है, यह विरोधिता बहुत हितकर है। कोई भी जुर्म चाहे कितने ही बड़े आदमी द्वारा हो, उसकी अन्धाधुंध पैरवी करना असूल के खिलाफ है।

उन्हीं दिनों विलायत की मिस कालेट ने अपनी एक पुस्तक में केशव बाबू की गलत और अनुचित कारवाईयों की भ्रत्सना की थी। पूजनीय भगवान ने मिस कालेट को अपनी एक चिट्ठी में लिखा डियर मैडम! में निहायत खुश हूँ कि इस समय जबकि ब्रहम समाज में एक सख्त तूफान आया हुआ है, उपरोक्त समाज को आप जैसा जोशीला न्याय प्रिय और सच्चा, वकील हाथ आया है कि जो उसकी सच्चाईयों को दिल व जान से प्रगट कर रहा है।

भगवान देवात्मा को यह देखकर बहुत आघात लगा कि झूठ और पाप का पक्ष लेने वाले अनेक है, परन्तु सच्चाई भलाई के हक में बोलने वाले बराए नाम। पक्षपात और अन्धी श्रद्धा ने कितने ही जनों को केशव बाबू का साथी बना दिया था। पूजनीय भगवान ने ऐसे जनों के विरोध में लिखा था-मनुष्य जगत में साधारण और हमारे देश में विशेषकर यह बहुत बड़ी कमजोरी है कि हमारे लोग आमतौर पर समाज की भलाई और वास्तविक उन्नति की उस कदर प्रवाह नहीं करते हैं, जितना किसी जन विशेष की नाराजगी का ख्याल करते हैं कि जिसको वह प्यार करते हैं।

उस से आगे भगवान ने लिखा था कि हमारे ऐसे भाईयों के लिए उचित है कि वह समाज को कृपा करके अपनी अफसोस नाक मिसालों से बदनाम न करें। जब केशव बाबू ने बहुत सी गलत बातें ब्रहम समाज में दाखिल की तो उनके अन्धे श्रद्धावान लोगों ने सच्चाई की जरा भी ताईद ने की थी। और साधारण ब्रहम समाज केशव बाबू की अनुचित कारवाईयों के कारण अलग हुई जिसने कि ब्रहम धर्म को ऐसी गलत और बेहूदा बातों से बचाया। उसकी हिमायत में उन्होंने

एक शब्द तक न निकाला। किसी समाज में स्वार्थी, दुनियां परस्त, झूठे लोगों का आ जाना उस समाज का दुर्भाग्य है। भगवान ने फरमाया था कि ब्रह्म समाज में कितने ही लोग हैं जो धर्म के भूखे नहीं है बल्कि उन्होंने समाज में प्रवेश ही इस नीयत से किया है कि कोई दुनियावी लाभ उठाया जाए। ऐसे लोग हर समय ताक में रहते हैं, जहां अपना स्वार्थ देखते हैं, खिसक कर वहीं पहुंच जाते हैं।

जो लोग किसी बुराई को देखकर चुप रहते हैं, वह एक मुर्दा लाश के तुल्य हैं। महाभारत का युद्ध ना होता, यदि भरी सभा में द्रोपदी को निर्वस्त्र करने की चेष्ठा दुर्योधन ने की उस समय यदि भीष्म पितामह चुपचाप यह तमाशा न देखते और खड़े होकर दुर्योधन को ललकारते कि वह ऐसी घिनौनी हरकत से बाज आएं।

अलाउदीन खिलजी ने चितौड़ पर हमला किया और राजस्थान में आस-पास के राजे चुपचाप यह तमाशा देखते रहे। खिलजी ने चितौड़ को विजय किया और रानी पदमनी ने सोलह हजार वीरांगनाओं के साथ जलती ऊन्नी में कूद कर अपने प्राण दे दिए। इसी तरह अलाउदीन खिलजी ने जैसलमेर के किले की चार साल तक घेरा बन्दी की। तब भी आप पास के राजे महाराजाओं ने जैसलमेर वालों का साथ देने की कोई चेष्टा नहीं की। वहां भी अनेक स्त्रियां आग में जल कर मर गई।

अभी अर्से दिनों की बात है कि मथुरा के निकट एक गांव में दो हरिजन लड़कों ने एक जाट लड़की से प्रेम किया और उनमें से एक ने उस लड़की के साथ शादी करनी चाही, तब गांव की पंचायत ने फैसला किया कि इन दोनों लड़कों और उस लड़की को फांसी दे दी जाए। पहले उन लड़कों को लाठियों से पीटा गया। उनको उलटा लटकाया गया। जलती हुई लकड़ी उनके मुंह में दी गई। उनमें से एक लड़का तो जल्दी ही मर गया। बाकी दो (लड़का और लड़की) कुछ ही देर बाद तड़प-तड़प कर मर गए। गांव के प्राय पांच सौ आदमी इस सारे भयानक नजारे को देखते रहे परन्तु किसी ने इस भयानक अत्याचार के विरूद्ध अपनी आवाज़ न उठाई। बाद में जब पुलिस को पता लगा तो अपराधियों को पकड़ा गया और उन पर मुकदमा चला। किसी अत्याचार या बुराई को चुपचाप देखते रहना और कोई विरोध न करना बड़ी मुर्खता वा अन्याय नहीं तो और क्या है।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh - 160022*** *से छपवाकर*

म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।

Book Posts